समकालीन विश्व में अमरीकी वर्चस्व

परिचय– आज के समय में अमेरिका ही एकमात्र महाशक्ति है । द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद से कई बार अमेरिका ने अपने आप को महाशक्ति के रूप में साबित करने की कोशिश की है। 1991 में सोवियत संघ के विघटन से अमेरिका के सामने कोई दूसरी महाशक्ति नहीं बची है। इराक पर प्रथम बार अमेरिका के नेतृत्व में हुए युद्ध के बाद यह स्वतः सिद्ध हो गया है कि अमेरिकी नीतियां अपने हित के लिए बनती हैं।

नयी विश्व व्यवस्था की शुरूआत–

वर्चस्व किसे कहते हैं

वर्चस्व [Hegemony] का अर्थ किसी राज्य के दबदबे से है। इस शब्द की जड़ें प्राचीन यूनान में नगर राज्यों की आपसी प्रतिद्विन्दिता में एथेन्स की प्रबलता के लिए प्रयोग में लाया जाता था। वर्तमान समय में अमेरिका के ताकतवर रूप को वर्चस्व के अर्थ में समझा जा सकता है। सोवियत संघ के विघटन के बहुत पहले ही अमेरिका बर्चस्व की ओर आगे बढ़ गया था। विश्व के अन्य देशों को बहुत बाद में यह अहसास हुआ कि वे वर्चस्व के दौर में जी रहें हैं। 1945 में प्रथम बार परमाणु बम के प्रयोग करने तथा बाद में कई वैज्ञानिक अनुसंधानों ने अमेरिका की स्थिति को अन्य देशों की तुलना में बहुत आगे कर दिया था।

नयी विश्व व्यवस्था किसे कहा जाता है।

1990 में इराक के द्वारा कुवैत पर हमला करने के बाद से अमेरिका के नेतृत्व में 34 देशों की मिलीजुली सेना द्वारा संयुक्त राष्ट संघ की सहमति से इराक पर हमला करने को अमरीकी राष्टपति द्वारा नयी विश्व व्यवस्था का नाम दिया गया। इस युद्ध में 660000 सैनिकों के साथ अमेरिका के सैनिकों की भारी संख्या थी।

अमेरिका का वर्चस्व किन रूपों में दिखाई देता है

अमेरिका का वर्चस्व तीन रूपों में दिखता है 1– सैन्य शक्ति के रूप में ,2–ढॉचागत ताकत के रूप में , 3– सांस्कृतिक रूप में

सैन्य शक्ति के रूप में अमेरिका का वर्चस्व

आज अमेरिका की सबसे बड़ी ताकत उसकी सैन्य शक्ति है। उसकी सेना के पास अत्याधुनिक हथियार हैं। उसकी रक्षा प्रणाली में अपने बचाव के लिए वह युद्ध के मैदान से दूर रहकर अपने शत्रु को नुकसान पहुॅचा सकता है। अपने बजट का बहुत बड़ा हिस्सा वह रक्षा क्षेत्र पर खर्च करता है। अमेरिकी रक्षा मंत्रालय पेंटागन लगातार रक्षा अनुसंधान और विकास व प्रौद्योगिकी पर बहुत बड़ा बजट खर्च करता है। अमेरिका के बाद दुनियॅा के 12 ताकतवर देशों का रक्षा बजट भी मिलकर अकेले अमेरिका के रक्षा बजट की बराबरी नहीं करते हैं।

ढॉचागत ताकत के रूप में वर्चस्व

वैश्विक अर्थव्यवस्था में एक ऐसा देश होता हे जो विश्व की अर्थव्यवस्था पर अपना दबदबा बनाये रखता है। ऐसा करने के लिए उसके पास नियमों को बनाने तथा उन्हें लागू करने की ताकत होनी चाहिए। कभी –कभी ऐसे देशों को दूसरे देशों के लिए भी व्यवस्था बनानी पड़ती है। अमेरिका द्वारा सार्वजनिक वस्तु के रूप में समुद्री व्यापार मार्ग (सी लेन ऑफ कम्यूनिकेशन) है जिसका उपयोग व्यापारिक जहाज करते हैं।अमेरिका की नौसेना की ताकत से वह समुद्री मार्ग में आवाजाही के नियम तय करता है।

इन्टरनेट भी एक अन्य उदाहरण है।अमेरिका के अधिकांश उपग्रहों पर निर्भरता होने से आज पूरे विश्व में उसकी ढॉचागत ताकत दिखाई देती है।

अमेरिका विश्व की अर्थव्यवस्था में 28 प्रतिशत की हिस्सेदारी रखता है। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद अमेरिका द्वारा कायम की गई ब्रेटनवुड प्रणाली आज भी कायम है। विश्व बैंक ,अर्न्तराष्टीय मुद्रा कोश और विश्व व्यापार संगठन अमेरिकी वर्चस्व का परिणाम हैं।

एम0बी0 ए0 का पाठयक्रम शुरू करने का श्रेय भी अमेरिका को ही है। वाह्र्टन स्कूल नाम का पहला बिजनेस स्कूल 1881 में अमेरिका में ही खुला था। अमेरिका ने ही यह साबित करने की कोशिश की है कि व्यापार करने के लिए भी पाठ्यक्रम पढना जरूरी है।

वर्चस्व सांस्कृतिक अर्थ में–

आज हर व्यक्ति की चाह होती है कि वह अमेरिकन लोगों की तरह जीवन जिए। वहॉ पर जाकर उच्च जीवन स्तर तथा सुविधाओं को प्राप्तकरे ।भारत सहित विश्व के सभी देशों से लोगों की इच्छा अमेरिका में जाकर बसने की होती है। पूरी दुनियां में अमेरिकन खान–पान तथा पहनावे की ओर लोगों का आर्कषण बना रहता है। सोवियत संघ के विघटन में अमेरिकी सांस्कृतिक वर्चस्व का बहुत बड़ा हाथ रहा है।

प्रथम खाड़ी युद्ध को किस नाम से जाना जाता है।

इस सैन्य अभियान को आपरेशन डेजर्ट स्टार्म कहा जाता है।

अमेरिका ने राष्टपति क्लिंटन के दौर में किस बात पर अधिक जोर दिया।

1992 में अमेरिका में बिल क्लिंटन अमेरिका के राष्टपति बने । उनका जोर विदेश नीति के स्थान पर घरेलू समस्याओं पर रहा। सैन्य शक्ति और सुरक्षा जैसी कठोर राजनीति के स्थान पर लोकतंत्र के बढावे ,जलवायु परिवर्तन तथा विश्व व्यापार जैसे नरम मुद्‌दों पर ध्यान दिया गया। हॉलाकि परन्तु इस दौर में भी अमेरिका ने कई जगहों पर सैन्य कार्यवाही की है।

आपरेशन इनफाइनाइट रीच क्या है

1998 में नैरोबी (केन्या) और दारे – सलाम (तंजानियां) के अमेरिकी दूतावासों पर आतंकवादी संगठन 'अलकायदा' द्वारा बमबारी के जबाव में आपरेशन इनफाइनाइट रीच के अर्न्तगत सूडान और अफगानिस्तान में अलकायदा के ठिकानों पर क्लिंटन के आदेश पर क्रूज मिसाइलों से हमले किए गये।

9/11 की घटना

11 सितम्बर 2001 के दिन अलकायदा के आतंकवादियों द्वारा अमेरिका में 4 विमानों का अपहरण कर दिया गया। दो विमानों को न्यूयार्क स्थित वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर की उत्तरी और दक्षिणी टावरों से टकराया गया। इस घटना में लगभग 4000 लोग मारे गये। यह अब तक अमेरिका पर सबसे बड़ा हमला था। तीसरा विमान अमेरिकी रक्षा विभाग के मुख्यालय पेंटागन से टकराया। चौथे विमान को अमेरिकी कांग्रेस की मुख्य इमारत से टकराना था परन्तु वह पेन्सिलवेनियां के एक खेत में गिर गया। इस घटना को 9/11 कहा जाता है। अमेरिका में महिने को तारीख से पहले लिखने का चलन है।

आपरेशन एन्डयूरिंग फ्रीडम–

9/11 के जवाब में अमेरिका ने आतंकवाद के खिलाफ विश्वव्यापी युद्ध के अंग के रूप में आपरेशन एन्डयूरिंग फ्रीडम चलाया। मुख्य रूप से अलकायदा और अफगानिस्तान में तालिबान शासन को निशाना बनाया गया। अमेरिका ने विश्व भर से कई लोगों को गिरफतार किया। क्यूबा के निकट ग्वांतानामो बे में बंदियों को रखा गया है। वहॉ पर किसी को भी जाने की अनुमति नहीं है।

आपरेशन इराकी फ्रीडम–

अमेरिका में बिल क्लिंटन के कार्यकाल क बाद जार्ज बुश सत्ता में आये। वे पूर्व राष्टपति जार्ज बुश सीनियर के पुत्र थे। अपने पिता के कार्यकाल में इराक पर पूर्ण प्रभुत्व न बना पाने के सपने को वे पूरा करना चाहते थे। 2003 में इराक पर यह आरोप लगाये गये कि उसने सामूहिक संहार के हथियार बना लिए हैं। उन्हें नष्ट करने के लिए अमेरिका के नेतृत्व में 40 से अधिक देशों का एक 'कोलेशन ऑफ विलिंग्स ' गठजोड बनाया गया। संयुक्त राष्ट संघ की अनुमति के बिना ही इराक पर हमला कर दिया गया। इसे आपरेशन इराकी फ्रीडम नाम दिया गया। इस युद्ध में सामूहिक संहार के हथियार तो नहीं मिले पर अमेरिका की नजर तेल भंडार पर थी और उसकी कोशिश वहॉ पर अपनी पसंद की सरकार का गठन करना था। इस घटना में 3000 अमेरिकी सैनिक तथा 500000 नागरिक मारे गये।

अमेरिकी शक्ति के रास्ते में अवरोध–

आज अमेरिका इतना ताकतवर देश होने के बावजूद सुरक्षित देश नहीं है। अमेरिका में भी लोगों का जीवन खतरे में है।2001 की घटना के बाद साबित हो गया है कि रक्षा प्रणाली में उन्नत होने के बाद भी अमेरिका की ताकत में कमियां हैं। अमेरिकी शक्ति के मार्ग में इसकी संस्थाओं की कार्यप्रणाली एक अवरोध है।वहॉ पर शक्तियों का बॅटवारा इस प्रकार किया गया है कि कोई भी अंग अकेले सैन्य शक्ति का बेलगाम प्रयोग नहीं कर सकता है। दूसरी रूकावट वहॉ के लोगों की समझदारी है । वहॉ जनसंचार के माध्यमों से तथा दबाव समूहों की सक्रियता के कारण सरकारें मनमाने फैसले नहीं ले पाती हैं। तीसरे अवरोध के रूप में नाटो संगठन है जो अमेरिका को अकेला मनमानी नहीं करने देगा क्योंकि अमेरिका के हित भी नाटो संगठन के साथ जुड़े हैं।

भारत –अमेरिका सम्बन्ध–

आज के समय में भारत के अमेरिका के साथ मजबूत संबंध बन गये हैं। कई लाख भारतीय अमेरिका में नौकरी कर रहे हैं। कई भारतीय मूल के लोग अमेरिका में उॅचे पदों पर स्थापित है। रक्षा के क्षेत्र में अमेरिका ने भारत के साथ कई समझौतों पर हस्ताक्षर किये हैं। अमेरिका अपने हितों को देखते हुए भारत के साथ संबंध मजबूत करने पर जोर देता है। एशिया में चीन से निपटने के लिए अमेरिका के साथ भारत के संबंध मजबूत होने आवश्यक हैं। भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अमेरिका के साथ भारत के संबंधें को नयी उॅचाइयों तक पहॅुचाया है। बैंडवेगन की नीति भी यही कहती है कि जिस तरफ हवा बह रही हो अपनी पीठ उसी ओर कर लेनी चाहिए।

कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न–

1–आपरेशन इनफाइनाइट रीच किससे सम्बन्धित है

2–अमरीकी वर्चस्व की राह में कोन–कौन से अवरोध हैं

3–किस अमेरीकी राष्टपति ने सैन्य शक्ति जैसी कठोर नीति के स्थान पर नरम मुद्दों पर ध्यान केन्द्रित किया।

4–आपरेशन डेजर्ट स्टार्म क्या था

5–9/11 की घटना से आप क्या समझते हैं।

6– वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर पर कब हमला हुआ था।

किशोर चन्द्र पाटनी

प्रवक्ता राजनीति विज्ञान

रा0 इ0 का0 गोरंगचौड़